P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-IV* ISSUE-II*October-2016
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

''माउण्ट आबू पर्वतीय पर्यटन का विकास'' एक विशेष अध्ययन

दिनेश मीना
व्याख्याता,
भूगोल विभाग,
गर्वमेन्ट कालेज,
किसन गढ़, अजमेर,
राजस्थान

सारांश

राजस्थान के माऊण्ट आबू भारत के पश्चिमी क्षेत्र का एक महत्वपूर्ण पर्वतीय मनोरम पर्यटन स्थल है, माऊण्ट आबू पश्चिमी भारत का एक मात्र हिल स्टेशन है। यह राजस्थान में शिमला के नाम से जाना जाता है। यहां की जलवायु बहुत ही स्वास्थ्यवर्धक है यहां की संकीर्ण घाटियाँ, ऊँचाई से बहते झरने तथा हरियाली पर्यटकों को अपनी और बारबार आकर्षित करती है जो प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से पर्यटन उद्योग को प्रभावित करती है पर्यटन स्थल पर प्रतिवर्ष विभिन्न उद्देश्यों से सैलानियों का आगमन होता है। भारत सरकार, राज्य सरकार एवं नगरीय स्तर पर पर्यटन से सम्बन्धित कई विभागों के एवं स्वयं सेवी संस्थाओं के प्रयासों के फलस्वरूप आने वाले पर्यटकों में निरन्तर वृद्धि होती जा रही है। यहां स्वदेशी तथा विदेशी पर्यटको का जमावड़ा प्रत्येक मौसम में लगा रहता है, यहां जैन मन्दिर दिलवाड़ा, विश्व प्रसद्धि है, ब्रह्मकुमारी, नक्की झील आदि मुख्य क्षेत्र है। आर्थिक विकास को गति देने के लिए यहां पर्यटन उद्योग को गति देने की आवश्यकता है। यहां की लोक संस्कृति से ओत–प्रोत मेले व त्यौहार है। इस क्षेत्र विशेष में माउण्ट आबू जनजाति संस्कृति का सम्मिलित रूप देखने को मिलता है।

स्वदेशी पर्यटकों का रूझान इस क्षेत्र में बढ़ा है अतः राज्य सरकार द्वारा इस क्षेत्र में विदेशी पर्यटकों के आगमन को बढ़ावा देने के लिए क्षेत्र में विभिन्न पैकेज ट्यूर को बढ़ावा देवें पर्यटन की आधारभूत सुविधाओं का विकास किया जावे, यातायात सुविधाऐं, आवास सुविधाओं का विकास किया जावे। इस क्षेत्र में जहां धार्मिक पर्यटन बहुत अधिक है, धार्मिक दृष्टि से दर्शनार्थी यात्रा करते है तो उसके आस–पास के पर्यटन स्थलों को अवश्य देखते है।

मुख्य शब्द : पर्यटन उद्योग, पर्वतीय पर्यटन, माउण्ट आबू, दिलवाडा, मनोरम, पर्यटन विकास, आधारभूत सुविधा।

प्रस्तावना

प्राचीन काल से ही प्राकृतिक एवं धार्मिक रूप से रमणीय स्थलों को देखने की जिज्ञासा मानव के मन में हमेशा से रही है। भ्रमण करने का स्वाभाविक गुण प्रत्येक सजीव प्राणी में होता है यह गमनागमन की गतिविध न केवल मनुष्य की जिज्ञासा की पूर्ति करती है बल्कि उसके चहुँमुखी ज्ञान का विकास करती है। मानव सभ्यता के साथ–साथ पर्यटन के विभिन्न आयामों का विकास होता आ रहा है। प्राचीन काल से ही मानव एवं प्रकृति में गहरा सम्बन्ध है वह प्रकृति के सुन्दरतम् स्थानों पर विश्राम कर शांति और सुकून प्राप्त करता है इसे आदिकाल से पयर्टन के नाम से न जानकर ''घुमक्कड़ी'' शब्द के नाम से जाना जाता था। प्राचीन एवं आधुनिक काल के पर्यटन आमोद–प्रमोद का साधन तो है ही लेकिन इसे आर्थिक लाभ के साथ भी जोड़ दिया है जिससे यह 'पर्यटन उद्योग' के रूप में जाना जाने लगा है।

20वीं शताब्दी के प्रारम्भ में पर्यटन एक क्रीड़ा या घोड़ा–गाड़ी में घूमना, साइकिल चलाना, शिविर लगाना, भ्रमण एवं नौका विहार करना आदि माना जाता था लेकिन परिवहन के साधनों के विकास के साथ ही पर्यटन के स्वरूप में तीव्र गति से बदलाव आया और यह विभिन्न लोगों का संगठन बन गया है जिससे पर्यटन उद्योग को एक नई दिशा प्रदान की है।

उद्देश्य

संसार के सभी देशों के बदलते हुए भौगोलिक पर्यावरण में पर्यटन का महत्त्व बढ़ता जा रहा है क्योंकि इसके द्वारा विभिन्न देशों के मध्य की दूरी ही कम नहीं होती है अपितु विभिन्न सभ्यता और संस्कृति एक दूसरे के निकट आती है जिससे सभ्यता एवं संस्कृति के विकास का मार्ग प्रशस्त होता है। पंडित जवाहरलाल नेहरू ने पर्यटन के विषय में कहा है कि– हमें विदेशी मित्रों का

स्वागत सिर्फ इसलिए नहीं करना चाहिए कि पर्यटन से विदेशी मुद्रा अर्जित होती है बल्कि इसलिए कि पर्यटन से आपसी सद्भाव और सूझबूझ की भावना बढ़ती है। आज जितनी आवश्यकता इस सद्भावना की है उतनी किसी अन्य वस्तु की नहीं है।

पर्यटन उद्योग की दृष्टि से विकसित देषों में विशेषकर संयुक्त–राज्य अमेरिका तथा यूरोप के देषों में अन्तर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय स्तर से लेकर क्षेत्रीय एवं स्थानीय स्तर पर अध्ययन हो रहा है।

वर्तमान में भारत में राष्ट्रीय स्तर से लेकर प्रादेशिक एवं स्थानीय स्तर पर शोध कार्य हो रहा है। राजस्थान में भी पर्यटन के ऊपर शोध कार्य हुए है परन्तु पर्वतीय पर्यटन के क्षेत्र कार्य नगण्य है। अतः माउण्ट आबू पर्वतीय पर्यटन का विकासएक विशेष अध्ययन को चुना है।

राजस्थान में राष्ट्रीय स्तर का एक ही पर्वतीय पर्यटन स्थल माउण्ट आबू है। यह अरावली पर्वतमाला के दक्षिण–पश्चिम भाग में स्थित है जो कि प्राकृतिक रूप से सुन्दर और शीतल स्थान है यह केन्द्र यातायात की सुविधा से समृद्ध है। जिससे यहां पर पर्यटक आसानी से पहुंच जाता है। यह दिल्ली से मुम्बई जाने वाले राष्ट्रीय राजमार्ग के पास स्थित है। माउण्ट आबू पर्यटन स्थल पर गर्मी का मौसम शीतल और सुहावना रहता है जो कि पर्यटकों के स्वास्थ्य के अनुकूल होता है जिससे पर्यटक गर्मी का मौसम यहीं बिताने के लिए मंत्रमुग्ध हो जाता है।

यह स्थल पर्यटकों से वर्ष भर भरा रहता है तथा यहां पर्यटक अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए विभिन्न संसाधनों का उपयोग करते हैं। जब संसाधनों का अत्यधिक विदोहन होता है तो उनके मूल स्वरूप में ह्रास होने लगता है। जिससे पर्यावरणीय पारिस्थितिकी में असंतुलन होने लगता है। राजस्थान को पर्यटन की श्रेणी में प्रथम स्थान पर लाने के लिए पर्यटन स्थल माउण्ट आबू बहुत महत्त्व रखता है जो कि अन्तर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर अपना प्रभुत्व बनाये रखता है।

माउण्ट आबू राजस्थान के अरावली

पर्वत श्रृंखला के दक्षिण–पश्चिम में 24°36'उत्तरी अक्षांश तथा 72°43' पूर्वी देशान्तर पर समुद्र तल से 1212 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है। माउण्ट–आबू अरावली श्रृंखला का एक भाग है। लेकिन यह इस श्रंखला से लगभग 25 कि.मी. चौडी घाटी द्वारा विच्छेदित है।

माउण्ट

आबू पूरे वर्ष पर्यटकों को आनन्दविभोर करने वाला यह पर्यटन स्थल जलवायु की दृष्टि से बहुत ही उत्तम है। यहां वर्ष के सुहावने – महीने तो आनन्दविभोर करने वाला पर्यटन स्थल है। यहां की मानसून त्रतु भी पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करे बिना नहीं रहती। वर्षा त्रतु में यहां चारों ओर हरियाली की अनुपम छटा दिखाई देती है। वर्षा के दौरान पर्वत की चोटी से नीचे आता पानी बहुत ही मनमोहक झरनों की भांति प्रतीत होता है। ऐसा लगता है कि जैसे सम्पूर्ण पर्वत शिखर नहाकर स्वच्छ हो गया हो। पर्वत तलहटी में उगी हरियाली सारा वातावरण स्वच्छ कर मनको अद्भूत शीतलता प्रदान करती है।

माउण्ट–आबू केवल सैलानियों का ही प्रियः रंजन केन्द्र नहीं है वरन् यह तो धार्मिक, शैक्षणिक, इतिहासज्ञ, वैज्ञानिक, लेखक, कलाकार आदि सब को आकर्षित करता है खनिज व वन सम्पदा से भरे हुए हैं तो दूसरी और अनमोल कारीगरी का नमूना दिलवाड़ा जैन मन्दिर। यहां वर्ष भर लाखों की संख्या में पर्यटक आते हैं चाहे वह धार्मिक प्रवृति का हो या कोई वैज्ञानिक, शैक्षिक फिर लेखक इसकी ओर खिंचा चला आता है।

दिलवाड़ा के जैन मन्दिर शिल्प कला के अनुपम भण्डार माउण्ट आबू स्थित उज्जवल धवल संगमरमर में निर्मित दिलवाडा जैन मन्दिर अत्यन्त प्राचीन तथा अपनी वास्तुकला, शिल्प कारीगरी आदि में अवर्णनीय व अद्भूत आकर्षक का केन्द्र है। जैन सांस्कृतिक वैभव एवं कला के साथ–साथ उस युग की हिन्दू संस्कृति के अनुपम द्योतक ये मन्दिर अपने में सम्पूर्ण कला को समेटे हुए है। नाना प्रकार के भावों देवी देवता, नृत्य करती देवांगनाऐं, पशु–पक्षी, फूल–पत्ती इत्यादि सभी ऐसा सजीव आभास कराती है कि मानों इनमें सिर्फ प्राण डालने की देरी हो पत्थर की इतनी सूक्ष्म कारीगरी शायद ही कही और देखने को मिले। श्वेत संगमरमर में बन इन मन्दिरों की शोभा अवर्णनीय है।

1. विमल वसहि,
2. लूण वसहि,
3. श्री ऋृषभ देवजी,
4. श्री पार्श्वनाथ जी,
5. श्री महावीर स्वामी जी आदि।

पांच मन्दिरों के इस समूह में विमल वसहि व लूण वसहि विशेष रूप से प्रसिद्ध एवं दर्शनीय है। ऋषभदेव जी के मन्दिर के पास ही स्थित एक छोटा सा मन्दिर जैन धर्म के अन्तिम तीर्थकर भगवान श्री महावीर स्वामीजी को समर्पित है।

नक्की झील

चारों ओर से हरे–भरे पेड़ों की कतारों तथा ऊँची–ऊँची पहाड़ियों से घिरी नयानाभिराम 'नक्की झील' गंगा व पुष्कर झील के समान ही पवित्र मानी गई है तथा इसका एक विशेष धार्मिक महत्व है। एक किवदन्ती के अनुसार इस तालाब को बालम रसिया नामक एक सिद्ध पुरूष ने अपने हाथ के नाखुनों से खोदकर बनाया था। इसी कारण यह नक्की झील कहलाती है। यहां नौका विहार का भी उत्तम प्रबन्ध है। झील के मध्य एक सुन्दर फव्वारा व जलपान गृह भी है।

टॉड–रॉक

नक्की झील के दक्षिण–पश्चिम में ऊँची पहाड़ी पर शिलाओं का आकार मेंढ़क के अनुरूप प्राकृतिक कटाव में है। इसी कारण ये टॉड–रॉक के नाम से विख्यात है। इन चट्टानों से नक्की झील व माउन्ट – आबू शहर का बहुत ही आकर्षक, चिर स्मरणीय, विहंगम दृश्य दिखाई पड़ता है।

नन–रॉक

राजपूतना क्लब के टेनिस कोर्ट के पास स्थित नन–रॉक आबू की दूसरी आकर्षक चट्टान है। हाथ जोड़े घूंघट निकाले एक ईसाई साध्वी (नन) जैसी प्रतीत होती है। इसी कारण यह चट्टान ननरॉक कहलाती है।

अर्बूदा देवी (अधर देवी)

आबू की मुख्य देवी के रूप में मान्य अर्बुदा देवी का प्राचीन मन्दिर आबू पर्वत के मुख्य बाजार के उत्तर में बस्ती से 2 कि.मी. दूर 4220 फिट की ऊँचाई पर एक पहाड़ी पर स्थित है।

आबू में ईश्वरीय ब्रह्मकुमारी स्थित है जो ध्यान व अध्यात्मिकता का केन्द्र है यहां देशी व विदेशी श्रृद्धालु आते है रहते है।

हनुमान मन्दिर से 5 कि.मी. नीचे की ओर जंगलों की सुन्दर घाटी में लगभग 700 सीढ़ियाँ उतरने के बाद एक सुन्दर व रमणीय स्थान आता है यहां एक विशाल कुण्ड में संगमरमर के बने गौमुख से निरन्तर जलधारा प्रवाहित होती रहती है। इसके आस–पास अनेक देवी देवताओं की प्राचीन मुर्तियों व शिलालेख बिखरे पड़े है।

सन्–सेट–पाइन्ट

यह एक विलक्षण सत्य है कि माउन्ट–आबू के सूर्यास्त दर्शन स्थल से जो अविस्मरणीय, अद्वितीय व अवर्णनीय 'सूर्यास्त दृश्य' दिखता है वह कहीं ओर से नहीं। क्षितीजीय सूर्यास्त का यह दृश्य दर्शकों के मन में एक अकल्पित व अवर्णनीय आनन्द उत्पन्न करता है।

निष्कर्ष

राज्य में पर्यटन व्यवसाय की विपुल सम्भावनाओं को दृष्टिगत रखते हुए राज्य सरकार द्वारा पर्यटन को विशिष्ट दर्जा देते हुए इसे 1989 में पर्यटन उद्योग किया जा चुका है। राजस्थान का पिछले एक दशक में अति लोकप्रिय पर्यटक राज्य के रूप में उद्गम हुआ है। जहां 1973 में राज्य में कुल 20 लाख देशी व विदेशी पर्यटक आये थे, वर्ष 2005 में 11.31 लाख विदेशी पर्यटक आये तथा स्वदेशी 187.87 लाख पर्यटक आये। वहीं यह संख्या 2015 में 366.62 लाख पर्यटकों तक पहुँच चुकी है, इन पर्यटकों में से स्वदेशी 351.87 लाख तथा विदेशी 14.75 लाख पर्यटक आये।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. अग्निहोत्री, विशाल, (2007)''ट्यूरिज्म एण्ड ट्रेवल मैंनेजमेन्ट'' साइवर टेक पब्लिकेशन, नई दिल्ली
2. अर्पणा, राज, (2004)''ट्यूरिज्म बेहेवियर '' कनिष्क पब्लिशर्स लि. नई दिल्ली
3. बेहल, नीतु, (2004)''ट्यूरिज्म मैनेजमेन्ट'' विश्व भारती पब्लिकेशन, नई दिल्ली
4. भीष्मपाल, एच., (1997)''पर्यटकों का आकर्षण'' राजस्थान सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली
5. भल्ला, एल.आर., (2005)''राजस्थान का भूगोल'' कुलदीप पब्लिकेशन, अजमेर
6. चौहान टी.एस. (1994)''ज्योग्राफी ऑफ राजस्थान'' वोल्यूम–1 व 2 विज्ञान प्रकाशन, जयपुर। साईन्टिफिक पब्लिशर, जोधपुर
7. चौहान, टी.एस., (1994)''नेचुरल एण्ड ह्यूमन रिसोर्स ऑफ राजस्थान'' साईन्टिफिक पब्लिशर, जोधपुर
8. डीसूजा, मारिओ, (2003)''ट्यूरिज्म एण्ड डेवलपमेन्ट इन इण्डिया'' मंगलदीप पब्लिकेशन, जयपुर
9. गुप्ता, मोहनलाल, (2004)''जिलेवार सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक अध्ययन, अध्ययन राजस्थानी ग्रन्थसार, जोधपुर

मैंगजीन्स

1. वार्षिक रिपोर्ट,पर्यटन मंत्रालय(वर्ष 1991से 2013 तक) भारत सरकार नई दिल्ली।
2. वार्षिकी प्रगति(वर्ष 1981 से 2013 तक), पर्यटन कला एवं संस्कृति विभाग,राजस्थान सरकार, जयपुर।
3. प्रगति प्रतिवेदन, वार्षिकी, पर्यटन कला एवं संस्कृति विभाग, राजस्थान, जयपुर।
4. ट्रेवल न्यूज, ट्रेवल एजेन्ट्स एसोसिएशन ऑफ इण्डिया, मुम्बई।
5. यात्री, भारतीय पर्यटन विभाग निगम (आई.टी.डी.सी.) की पत्रिका, नई दिल्ली।
6. अतिथि, ट्यूरिज्म, आर्ट एण्ड कल्चर डिपार्टमेन्ट मैगजीन, राजस्थान सरकार।
7. योजना, प्रकाशन विभाग सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय की पत्रिकाऐं भारत सरकार, नई दिल्ली।
8. दैनिक भास्कर, राजस्थान पत्रिका, टाइम्स ऑफ इण्डिया, इकानोमिक टाईम्स, इण्डियन एक्सप्रेस, के पर्यटन लेख।